

# Inhalt

## Der von Fallersleben

Vorwort des Herausgebers 11

## Unpolitische Lieder

|                                  |    |
|----------------------------------|----|
| Knüppel aus dem Sack             | 16 |
| Klagelied                        | 17 |
| Stimme aus der Wüste             | 18 |
| Im Jahr 1812                     | 19 |
| Jusqu' à la mer                  | 20 |
| Grün                             | 21 |
| Die Verbrüderung                 | 22 |
| Schlafe! was willst du mehr?     | 23 |
| Stand und Stände                 | 24 |
| Nie ohne dieses!                 | 24 |
| Hunde und Katzen                 | 26 |
| Von                              | 27 |
| Des Leibes und der Seele Krieg   | 28 |
| Von und Aus                      | 29 |
| Hindurch!                        | 29 |
| Der Korporalstock                | 30 |
| Mailied                          | 32 |
| Eile mit Weile!                  | 33 |
| Mützen                           | 33 |
| Angebilde                        | 34 |
| Statistische Glückseligkeit      | 34 |
| Lapidarstil                      | 35 |
| Die unmündigen Aufgeklärten      | 36 |
| Die monarchischen Frommen        | 36 |
| Ein Weltgericht                  | 37 |
| Die orthodoxen Royalisten        | 37 |
| Ein Staatsgericht                | 38 |
| Niemandes Herr, Niemandes Knecht | 38 |
| Blitzableiter                    | 40 |
| Herrnhuter in beiderlei Gestalt  | 40 |

|   |    |
|---|----|
| Trinklied                                 | 41 |
| Die Adelszeitung nach Christi Geburt 1840 | 42 |
| Höchst und Allerhöchst                    | 43 |
| Die Patrioten                             | 44 |
| Tierquälerei                              | 45 |
| Champagnerlied                            | 46 |
| Der deutsche Kaiser                       | 47 |
| Heute mir, morgen dir                     | 47 |
| Licht und Schatten                        | 48 |
| Zensorenmissverständniss                  | 49 |
| Die Genügsamen                            | 49 |
| Die wilden Gänse                          | 50 |
| Haifisch                                  | 51 |
| Freiheit                                  | 51 |
| Trinklied                                 | 52 |
| Kirchenhistorisches                       | 53 |
| Landwirtschaftliches                      | 53 |
| Die liberalen Modegecken                  | 54 |
| Leider!                                   | 54 |
| Schwabenkrieg                             | 55 |
| Ordenssehnsucht                           | 56 |
| Das alte Lied                             | 58 |
| Kunstzopf                                 | 59 |
| Sterne                                    | 60 |
| Herren und Knechte                        | 60 |
| Nota bene!                                | 61 |
| Die Eidgenossen                           | 62 |
| In der Heimat                             | 63 |
| Letztes Lied                              | 63 |
| Frühlingswunsch                           | 64 |
| Der Wehrstand                             | 64 |
| Abendlied                                 | 65 |

## **Vermischtes**

|                                   |    |
|-----------------------------------|----|
| Wir wollen es nicht haben         | 67 |
| Entwicklung auf historischem Wege | 68 |
| Bauernglaube                      | 69 |

|   |     |
|---|-----|
| Vaterländischer Rosenkranz                                      | 69  |
| Titelkram und Ordenbettel                                       | 70  |
| Wie ist doch die Zeitung interessant!                           | 71  |
| Café national   | 72  |
| Ständisches   | 73  |
| Fleckseife  | 73  |
| Der König weiss es nicht  | 74  |
| Nunquam retrorsum   | 75  |
| Die Interessen  | 76  |
| Polizei, Geld und Wetter  | 77  |
| Eine Frage an ein Hoch-,<br>Hochwohl- und Wohlgebornes Publikum | 78  |
| Al pari   | 79  |
| Unterschied des Bedingten und Unbedingten                       | 80  |
| Salvator-Bier   | 81  |
| Verwöhnung  | 82  |
| Der Hausorden   | 84  |
| Mißheirat   | 85  |
| Allerhöchste Kultur   | 86  |
| Porc à la mode  | 87  |
| An die Gegenwartvergötterer                                     | 88  |
| Serenate unter den Fenstergittern                               |     |
| Des Kuhschnappelschen Landtags                                  | 89  |
| Die sieben Sachen   | 90  |
| Offizielle Volkssouveränität                                    | 91  |
| Heraldisches  | 92  |
| Ehrlich   | 92  |
| Vieh- und Virilstimmen  | 93  |
| Der Dichter ist ein Seher                                       | 93  |
| Schnaderhüpfel  | 94  |
| Langweilig und schlecht   | 95  |
| Landtagsabschied  | 96  |
| Höfische Poesie   | 97  |
| Phantasien eines kunstliebenden Klosterbruders                  | 98  |
| Philister über dir, Simson!                                     | 99  |
| Klassisches Stilleben   | 100 |
| Hundertjähriger Kalender  | 101 |
| Die alte Leier  | 102 |

|                                       |     |
|---------------------------------------|-----|
| Aria                                  | 103 |
| Häutiges                              | 104 |
| Patriotismus                          | 104 |
| Von Gottes Gnaden                     | 105 |
| Das Lied der Deutschen                | 106 |
| Wiegenlied                            | 108 |
| Göthescher Farbenwechsel              | 109 |
| Fremdherrschaft                       | 110 |
| Frühlingslied an der Saale            | 111 |
| Deutscher Nationalreichtum            | 112 |
| Beitrag zur Tierarzneikunde           | 114 |
| Cause célèbre                         | 115 |
| Himmlisches Abenteuer                 | 116 |
| Fastenmärlein                         | 117 |
| Letzter Wunsch                        | 118 |
| Freikugel                             | 119 |
| Hohe Gewissensruhe                    | 120 |
| Adeliges Heidentum                    | 121 |
| Stille Messe                          | 122 |
| Das Hohelied vom Zensor               | 124 |
| Das allgemeine Beste                  | 125 |
| Der christliche Staat                 | 126 |
| St. Bonifacius                        | 127 |
| Ein neues Lied                        | 128 |
| Das Glück der Vergesslichkeit         | 129 |
| Neujahrslied aller Deutschen für 1875 | 130 |

## **Kinderlieder**

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| Unser Storch              | 133 |
| Dann bin ich guter Dinge! | 134 |
| Tanzmeister Wiedehopf     | 136 |
| Frühlingsbotschaft        | 136 |
| Maler Frühling            | 137 |
| Der Lerche Klagelied      | 137 |
| Frühlings Ankunft         | 138 |
| Mein Lämmchen             | 139 |

|                                    |     |
|------------------------------------|-----|
| Vergissmeinnicht                   | 140 |
| Wettstreit                         | 140 |
| Knabe und Maikäfer                 | 141 |
| Bienchen, summ herum!              | 142 |
| Ein schweres Rätsel                | 142 |
| Spatz und Katze                    | 143 |
| Der Spatz in seiner Würde          | 144 |
| Äpfellese                          | 146 |
| Lass rauschen, immer rauschen!     | 147 |
| Sehnsucht nach dem Frühling        | 148 |
| Der Eislauf                        | 149 |
| Rätsel                             | 150 |
| Kitzlein, Spitzlein und Fritzelein | 151 |
| Das Lied vom Monde                 | 152 |
| Der Feind der Armen                | 154 |
| Weihnachtslied                     | 155 |
| Winters Abschied                   | 156 |
| Winters Flucht                     | 157 |
| Hund und Katzen                    | 158 |
| Warnung                            | 159 |